पौलुस की कारागृह से लिखी पत्रियाँ

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय चार

पौलुस और फिलिप्पियों

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

नोट्स 6

I. परिचय (0:26) 6

II. पृष्ठभूमि (2:22) 6

A. संबंध (3:33) 6

B. कारागृह में कष्ट (8:41) 7

C. फिलिप्पी की परिस्थितियां (17:11) 8

1. पौलुस के लिए चिंता (17:49) 8

2. कलीसिया के लिए समस्याएं (22:03) 9

III. संरचना एवं विषयवस्तु (28:53) 10

A. अभिवादन (29:43) 10

B. आभार-प्रदर्शन (31:10) 11

C. प्रार्थना (32:22) 11

D. मुख्य भाग (33:12) 12

1. पौलुस की दृढ़ता (34:55) 12

2. दृढ़ बने रहने के उपदेश (39:14) 13

3. दृढ़ता की पुष्टि (53:23) 16

E. अंतिम अभिनंदन (55:34) 16

IV. आधुनिक प्रयोग (57:01) 17

A. दृढ़ता की प्रकृति (58:17) 17

1. परिभाषा (58:40) 17

2. आवश्यकता (1:02:11) 17

3. आश्वासन (1:04:15) 18

B. दृढ़ता की विचारधारा (1:06:49) 19

1. नम्रता (1:07:16) 19

2. आशावाद (1:16:49) 20

3. आनन्द (1:20:06) 21

C. दृढ़ता की सेवकाई (1:24:00) 21

V. उपसंहार (1:29:44) 22

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 23

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न **29**

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

तैयारी

- फिलिप्पियों की पत्री पढ़ें।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:26)

II. पृष्ठभूमि (2:22)

A. संबंध (3:33)

पौलुस ने अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान फिलिप्पी में कलीसिया की स्थापना की थी, शायद 49 या 50 ईस्वी के दौरान।

फिलिप्पी में पौलुस :

- पहले व्यक्ति को विश्वास में लेकर आया।
- दुष्टात्मा निकालने के कारण कारागृह में डाला गया
- द्वारा एक जाने-माने दरोगा ने मसीह में विश्वास किया

कलीसिया बहुत ही गरीब थी, वे सदैव आर्थिक रूप से पौलुस की सहायता करने के योग्य नहीं थे। परन्तु जब उनके पास अवसर था तो उन्होंने उदारता से उसे दिया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने फिलिप्पियों को अपने मित्रों के रूप में संबोधित किया (फिलिप्पियों 2:12 और 4:1)।

B. कारागृह में कष्ट (8:41)

पौलुस ने प्राय: बहुत कष्टों का सामना किया। इन कष्टों को सहन करना कई बार उसके लिए बहुत मुश्किल रहा। बहुत बार वह दु:खी और निराश भी हुआ।

उसने कष्टों से छुटकारे के रूप में प्राय: मृत्यु के विषय में बात की।

पौलुस की परिस्थितियां इतनी कष्टकर थीं कि मसीह के साथ होने के लाभ उसे अधिक लगे :

- सेवकाई में बने रहने की उसकी चाहत से
- मृत्यु के लिए उसकी घृणा से

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस पूरी तरह से आश्वस्त नहीं था कि उसकी मृत्यु होगी।

C. फिलिप्पी की परिस्थितियां (17:11)

1. पौलुस के लिए चिंता (17:49)

जैसे ही वे योग्य हो पाए उन्होंने यह भेजकर अपनी चिंता को प्रकट किया :

- पौलुस की भौतिक आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए भेंट
- पौलुस को वह भेंट पहुंचाने के लिए और उसकी सेवा करने के लिए इपफ्रुदीतुस को

इपफ्रुदीतुस ने पौलुस को यह विवरण भी प्रदान किया जिसमें फिलिप्पियों के इस भय को व्यक्त किया गया कि :

- पौलुस को अन्य विश्वासियों के द्वारा सताया जा रहा था
- मृत्यु का खतरा उसके सिर पर मंडरा रहा था

फिलिप्पी के लोग चिंतित थे कि कहीं उसकी मृत्यु न हो जाए, चाहे वह उसकी हत्या के द्वारा हो या फिर सार्वजनिक दण्ड के द्वारा।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. कलीसिया के लिए समस्याएं (22:03)

a. सताव

फिलिप्पी में कलीसिया की स्थापना के ठीक बाद पौलुस ने थिस्सलुनिके में यहूदियों के बड़े विरोध का सामना किया था।

कलीसिया को अविश्वासियों द्वारा बहुत सताया जा रहा था।

b. झूठी शिक्षाएँ

पौलुस ने फिलिप्पियों को प्रत्येक झूठी शिक्षा को ठुकराने के लिए तैयार कर दिया था।

पौलुस शायद चिंतित होगा

- उन झूठी शिक्षाओं के प्रति जिन्होंने कुलुस्से और लिकुस घाटी की कलीसियाओं के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया था
- यरुशलेम के मसीही यहूदियों से (देखें गलातियों.2:11-21; रोमियों 4:9-17)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

c. मतभेद

फिलिप्पियों ने कलीसिया के भीतर ही विरोधों से संघर्ष किया।

पौलुस ने उन दो स्त्रियों को उपदेश दिया जो अपने मतभेदों को सुलझा नहीं पा रहीं थीं।

पौलुस ने अपने पत्री में कलीसिया में एकता और प्रेम पर बल देने में काफी स्थान को समर्पित किया।

III. संरचना एवं विषयवस्तु (28:53)

A. अभिवादन (29:43)

पौलुस पत्री का प्राथमिक लेखक है। पत्र दर्शाता है कि यह पत्री तीमुथियुस की ओर से भी है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

फिलिप्पियों पौलुस की एकमात्र पत्री है जो पौलुस की प्रेरिताई के अधिकार की ओर ध्यान आकर्षित नहीं करती।

B. आभार-प्रदर्शन (31:10)

पौलुस धन्यवाद के उच्च स्तरीय कथन को प्रस्तुत करता है, और कहता है :

- फिलिप्पियों द्वारा पौलुस के जीवन में लाए गए आनन्द के बारे में
- उनके उद्धार की उसकी अपेक्षाओं के बारे में बात करता है के बारे में

C. प्रार्थना (32:22)

पौलुस की प्रार्थना उन कथनों से भरी हुई है जो पूरी पत्री में दिए गए महत्व को प्रदर्शित करता है :

- सही निर्णय लेने
- अच्छे कार्य करने
- विश्वास और कार्य में बने रहने
- परमेश्वर को महिमा और स्तुति प्रदान करने

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

D. मुख्य भाग (33:12)

पौलुस ने फिलिप्पियों को यह बताया कि वह उनसे कितना प्यार करता था और वह उनकी मित्रता और सेवकाई के लिए कितना आभारी था।

1. पौलुस की दृढ़ता (34:55)

a. वर्तमान सेवकाई, 1:12-18क

पौलुस अपने कष्टों के बावजूद आनंदित रहने के कारणों को प्राप्त करने के द्वारा दृढ बना रहा।

b. भविष्य के छुटकारे, 1:18ख-21

पौलुस ने इस संभावना पर ध्यान दिया कि वह अंत में शायद कारागृह से मुक्त हो जाए।

c. भविष्य की सेवकाई, 1:22-26

पौलुस ने आनन्द के स्रोत के रूप में फिलिप्पियों के प्रति अपनी भावी सेवकाई की संभावना देखी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. दृढ़ बने रहने के उपदेश (39:14)

पौलुस ने उन्हें मसीह में विश्वासयोग्य रहने और कष्टदायक परिस्थितियों में भी उदाहरणपूर्ण जीवन जीने के लिए निर्देश दिए।

a. दृढ़ता का महत्व, 1:27-2:18

परमेश्वर ने आशीष के माध्यमों के रूप में फिलिप्पियों के कष्टों की योजना बनाई थी।

पौलुस चाहता था कि फिल्लिपी के लोग कष्टों के बीच आनंद करें क्योंकि यह आशीष को उत्पन्न करते हैं।

b. दृढ़ता के लिए सहायता, 2:19-30

कष्टों को सहना तब आसान होता है जब सच्चे लोग दिन-प्रतिदिन के आधार पर हमारी सहायता करने के लिए हों और वे भी हमारे साथ कष्ट सह रहे हों।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने इपफ्रुदीतुस को पुन: उनके पास भेजा ताकि वह उनके मनों को शांति दे और उनके प्रति सेवकाई करे।

पौलुस ने तीमुथियुस को फिलिप्पी में भेजने की योजना बनाई।

पौलुस को आशा थी वह स्वयं कारागृह से मुक्त हो जाएगा और फिलिप्पियों के प्रति सेवकाई करने के लिए आएगा।

c. दृढ़ता का उदाहरण, 3:1-16

पौलुस विश्वास में दृढ़ता का एक सकारात्मक उदाहरण था :

- विचारधारा
- व्यवहार

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने दुनियावी योग्यताओं पर निर्भर होने का इनकार कर दिया और केवल मसीह की योग्यताओं पर निर्भर रहा जो परमेश्वर ने उसे विश्वास के माध्यम से प्रदान की।

हमें हमारा विश्वास बनाए रखना आवश्यक है, और हमें पवित्र जीवन जीना भी आवश्यक है, नहीं तो हम हमारे विश्वास को झूठा साबित करेंगे।

विश्वास का मुंह से अंगीकार करना पर्याप्त नहीं है— हमें विश्वास में दृढ़ बने रहना आवश्यक है।

d. दृढ़ बने रहने की चुनौतियां, 3:17-4:9

पौलुस ने फिलिप्पियों को उत्साहित किया कि वे परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता में ठोकर न खाएं :

- झूठे शिक्षकों के कारण
- कलीसिया में किसी मतभेद के कारण
- व्यक्तिगत कठिनाइयों के कारण

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

कलीसिया के सच्चे विश्वासी भी अन्य विश्वासियों के समक्ष दृढ़ता की चुनौतियों को प्रस्तुत कर सकते हैं।

विश्वासियों को परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह उन्हें अपनी चिंताओं से मुक्त करे।

3. दृढ़ता की पुष्टि (53:23)

पौलुस ने अपने पूरे दिल से फिलिप्पियों से प्रेम किया था। उनके उपहार ने उसे उत्साहित किया।

E. अंतिम अभिनंदन (55:34)

कैसर के घराने के विश्वासियों का उल्लेख दर्शाता है कि पौलुस के कारावास ने उसके सुसमाचार की सेवकाई में बाधा उत्पन्न नहीं की थी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. आधुनिक प्रयोग (57:01)

A. दृढ़ता की प्रकृति (58:17)

1. परिभाषा (58:40)

सच्चा विश्वास और धार्मिक जीवन

सच्ची धार्मिकता और उद्धार पाने के लिए पौलुस की सारी मानवीय प्रतिष्ठा और भले कार्य व्यर्थ थे।

जब तक हम हमारी धार्मिकता के लिए पूरी तरह से मसीह की योग्यताओं पर निर्भर रहते हैं, हम दृढ़ बने रहते और हमारे विश्वास में स्थिर खड़े रहते हैं।

2. आवश्यकता (1:02:11)

यदि हम सच्चे विश्वास को बनाए रखने में असफल हो जाते हैं तो :

- हम मसीह में नहीं पाए जाएंगे
- जिससे हम अनन्त महिमा के जीवन के लिए पुन: जी भी नहीं उठेंगे

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यदि हम धार्मिक जीवन में दृढ़ नहीं बने रहते हैं तो हम स्वयं को अविश्वासी सिद्ध करते हैं और जिससे हम उद्धार प्राप्त नहीं करेंगे।

3. आश्वासन (1:04:15)

आश्वासन के प्रकाश में :

- दृढ़ता पर पौलुस की शिक्षा विश्वासियों के लिए खतरा नहीं है
- बल्कि राहत है

प्रत्येक सच्चा विश्वासी निश्चित रूप से विश्वास और धार्मिक जीवन में दृढ़ बना रहेगा जिससे हमारा उद्धार निश्चित हो जाता है।

वह अच्छे उद्देश्य के लिए हमारे हृदयों और मनों को नियंत्रित करता है।

- इसमें हमारी दृढ़ता भी शामिल होती है।
- हम अंत तक स्थिर खड़े रहने में किसी भी तरह से असफल न हो जाएं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. दृढ़ता की विचारधारा (1:06:49)

1. नम्रता (1:07:16)

पौलुस के पास परमेश्वर के समक्ष नम्र बने रहने के बहुत से कारण थे। इस सच्चाई को स्वीकार करने के द्वारा उसने परमेश्वर द्वारा बनाए जाने के लिए स्वयं को तैयार किया।

पौलुस ने अपनी विचारधारा को यीशु की विचारधारा के समान बना दिया, जिसने अपने और हमारे लिए परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करने के लिए स्वयं को अपनी इच्छा से नम्र कर दिया।

कुछ विद्वानों ने सुझाव दिया है कि फिलिप्पियों 2:6-11 एक भजन का भाग है जो पौलुस द्वारा फिलिप्पियों की पत्री के लिखे जाने से पूर्व भी कलीसिया में पाया जाता था।

फिलिप्पियों 2:6-11 मसीह को इतिहास के तीन चरणों में दर्शाता है :

- देहधारण से पूर्व की अवस्था
- उसकी नम्रता
- उसका उत्थान

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

दीनता धार्मिक जीवन और विश्वास में दृढ़ बने रहने में सहायता करती है।

2. आशावाद (1:16:49)

पौलुस का आशावाद —बुरी बातों की अपेक्षा अच्छी बातों पर ध्यान देने का विवेकपूर्ण निर्णय था।

जब पौलुस सुसमाचार के पाखण्डी प्रचारकों द्वारा मुश्किलों को सह रहा था तो उसने :

- उन आशीषों पर ध्यान देने का चुनाव किया कि मसीह का प्रचार तो हो रहा था।
- प्रचारकों के बुरे उद्देश्यों पर नहीं।

भलाई पर केन्द्रित रहना और चिंता एवं हताशा के विरुद्ध लड़ना हमारे हृदयों और मनों की रक्षा के लिए परमेश्वर को पुकारने का एक साधन है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. आनन्द (1:20:06)

पौलुस ने तनावपूर्ण परिस्थितियों में दृढ़ बने रहने के लिए आनन्द को प्राप्त करने पर ध्यान दिया।

पौलुस ने फिलिप्पियों को आनन्दित होने के लिए उत्साहित किया क्योंकि प्रभु निकट था :

- चाहे आवश्यकता के समय उनकी सहायता के रूप में
- या फिर उस राजा के रूप में जो संपूर्ण पृथ्वी पर अपने राज्य को लाने के लिए पुन: लौटेगा

C. दृढ़ता की सेवकाई (1:24:00)

फिलिप्पियों की भेंट ने उसके कष्टों को कम कर दिया, जिससे दृढ़ बने रहना कुछ आसान हो गया था।

फिलिप्पियों ने अपने प्रेम और उत्साहवर्द्धन के माध्यम से पौलुस की सेवा की थी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हम दृढ बने रहने में दूसरों की सहायता कर सकते हैं :

- उनके साथ समय व्यतीत करने के द्वारा
- उनकी भौतिक आवश्यकताओं में उनकी सहायता करने के द्वारा

V. उपसंहार (1:29:44)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. फिलिप्पियों की कलीसिया के साथ पौलुस के संबंध का वर्णन कीजिए।

2. पौलुस के पिछले कष्टों और यह पत्री लिखते समय उसके वर्तमान कष्टों को सारगर्भित कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. जब पौलुस ने उन्हें पत्री लिखी तो फिलिप्पी में कैसी परिस्थितियां थीं?

4. फिलिप्पियों की पृष्ठभूमि को जानना किस प्रकार आपको वह जानने में सहायता करता है कि जो पौलुस ने लिखा वह क्यों लिखा?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. किन क्षेत्रों में पौलुस दृढ बना रहा? किन माध्यमों से वह दृढ बना रहा?

6. पौलुस ने फिलिप्पियों को दृढ बने रहने के लिए किस प्रकार के प्रोत्साहन दिए?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. किन रूपों में पौलुस ने फिलिप्पियों की दृढ़ता में उनकी पुष्टि की?

8. प्रत्येक खण्ड के मुख्य बिन्दुओं को दर्शाते हुए फिलिप्पियों की पत्री की संरचना और विषय-वस्तु को सारगर्भित कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. इस अध्याय में उल्लिखित दृढ़ता की प्रकृति के तीन पहलुओं का वर्णन कीजिए।

10. दृढ़ता की सही विचारधारा की तीन विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

11. कलीसिया किन रूपों में दृढ बने रहने की सेवा को व्यक्त करती है?

12. आधुनिक कलीसिया को किस प्रकार दृढ़ता के विषय में पौलुस की शिक्षाओं को लागू करना चाहिए?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. पौलुस ने विदा होकर मसीह के साथ रहने और पृथ्वी पर सेवकाई में उसकी निरंतर उपयोगिता की इच्छा के बीच संघर्ष किया। यह जान लेना कि इस पृथ्वी पर हम सबके लिए परमेश्वर के पास एक उद्देश्य है, दृढ बने रहने में किस प्रकार आपकी सहायता करता है?

2. फिलिप्पी में पौलुस के कई मित्र थे जिन्होंने उसकी सेवा की, जो उसके लिए प्रोत्साहन रहे। क्या जरुरत के समय किसी ने आपकी सेवा की है? उसका क्या प्रभाव रहा और उसने किस प्रकार दृढ बने रहने में आपकी सहायता की?

3. किस प्रकार हमारा उद्धार मसीह में तो सुरक्षित है (यूहन्ना 3:36; यूहन्ना 17:3; इफिसियों 1:13-14; रोमियों 3:22-24), परन्तु फिर भी यह विश्वास में हमारे दृढ रहने पर निर्भर करता है?

4. निराशा और कष्टों के बीच पौलुस के आशावाद ने उसे दृढ बने रहने में सहायता की। किस प्रकार परमेश्वर के प्रति धन्यवादी ह्रदय को रखना दृढ बने रहने में हमारी सहायता करता है?

5. किस प्रकार प्रभु में आनंदित रहना और अपनी चिंताओं के विषय में प्रार्थना करना हमें शांति प्रदान कर सकता है और दृढ बने रहने में हमारी सहायता कर सकता है?

6. किस प्रकार घमंड हमारे दृढ बने रहने में रूकावट उत्पन्न कर सकता है?

7. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org